सडाको

एलेअनोर, हिंदी : विदूषक

हिरोशिमा के बच्चों को समर्पित

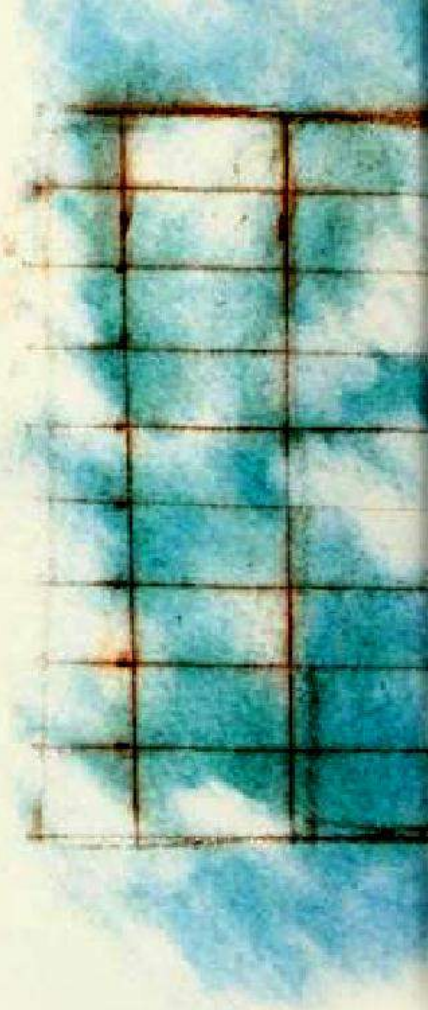

अगस्त 1954 की एक सुबह को सडाको ससाकी ने हिरोशिमा में नीले आकाश की ओर देखा. आसमान में एक भी बादल नहीं था. यह एक शुभ-चिन्ह था. सडाको हमेशा शुभ-चिन्हों को तलाशती रहती थी.

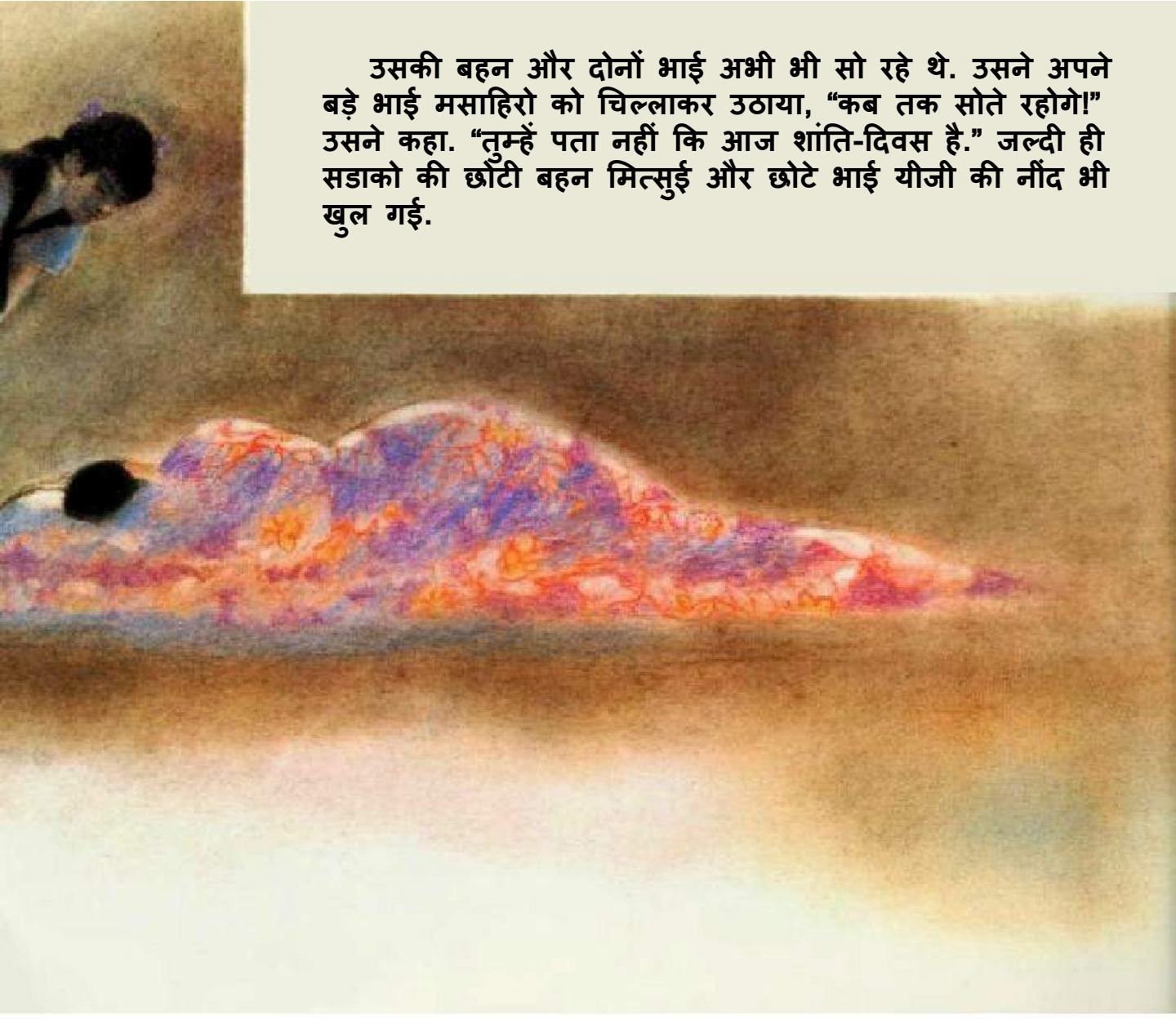

उसकी बहन और दोनों भाई अभी भी सो रहे थे. उसने अपने बड़े भाई मसाहिरो को चिल्लाकर उठाया, “कब तक सोते रहोगे!” उसने कहा. “तुम्हें पता नहीं कि आज शांति-दिवस है.” जल्दी ही सडाको की छोटी बहन मित्सुई और छोटे भाई यीजी की नींद भी खुल गई.

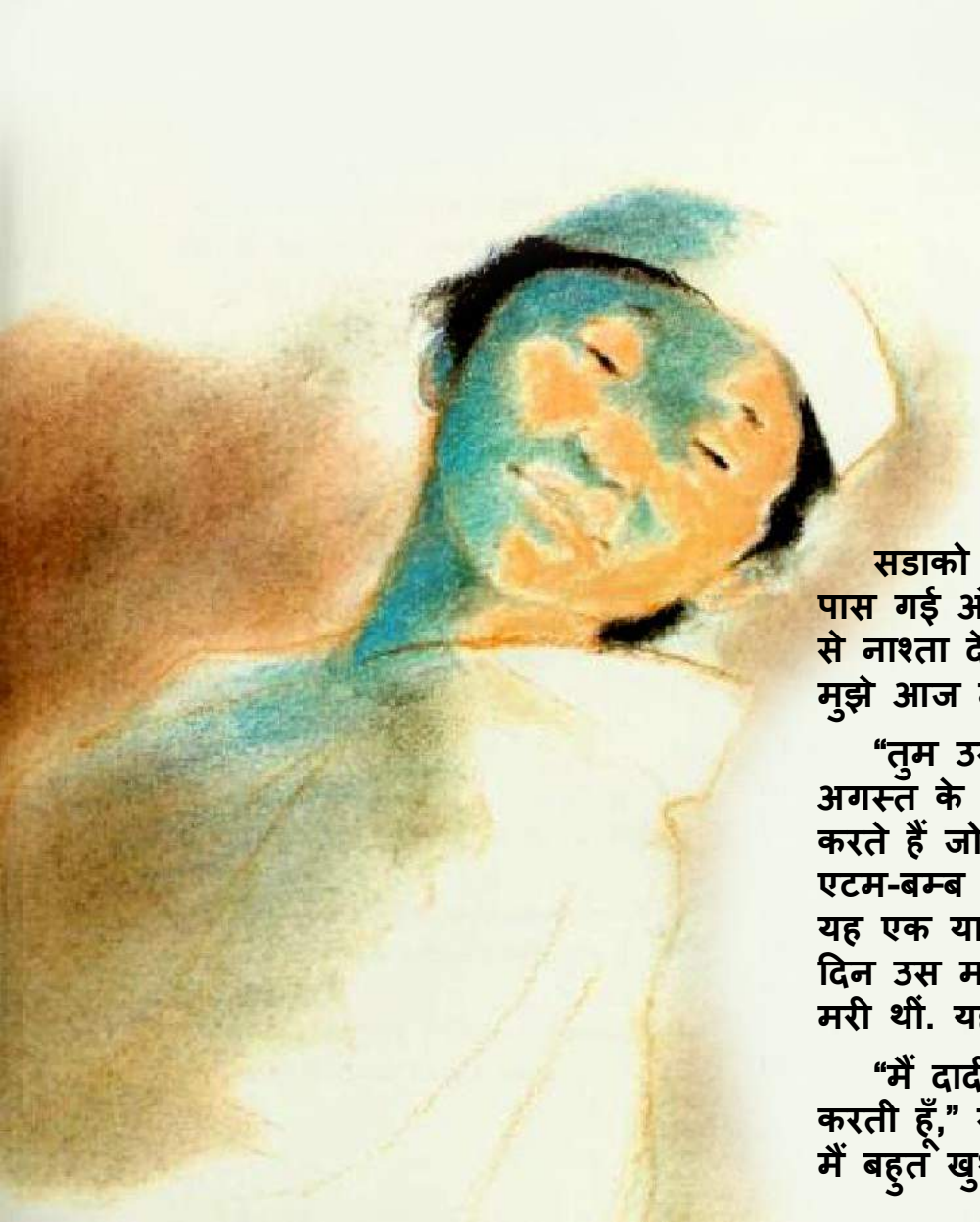

सडाको तेज़ी से रसोई में माँ के पास गई और रोते हुए बोली, “जल्दी से नाश्ता दे दो, बहुत देरी हो रही है. मुझे आज मेले में जाना है.”

“तुम उसे मेला मत कहो. छह अगस्त के दिन हम उन लोगों को याद करते हैं जो हमारे शहर हिरोशिमा में एटम-बम्ब गिरने के कारण मरे थे. यह एक यादगार-दिवस है. आज ही के दिन उस मनहूस बम्ब में तुम्हारी दादी मरी थीं. यह एक अशुभ दिन है.”

“मैं दादी ओबासान का बहुत आदर करती हूँ,” सडाको ने कहा. “पर आज मैं बहुत खुश हूँ.”

नाश्ते के बाद सडाको कुछ देर तक अपने पैर के पंजों को दबाती रही. उसे पिछले साल का “शांति-दिवस” याद आ रहा था. वहां कितनी भीड़ थी, संगीत था और आतिशबाजियां थीं. बुढ़िया-के-बाल वाली सफ़ेद मिठाई का स्वाद उसे अभी भी याद था.

दरवाज़े पर दस्तक सुनकर सडाको कूदी. उसकी प्रिय मित्र चुज़ूको बाहर खड़ी थी. दोनों लड़कियों में इतनी पक्की दोस्ती थी जैसे वो एक ही टहनी की दो पत्तियां हों.

“माँ क्या हम “शांति-पार्क” जाएँ?” सडाको ने पूछा.

“हाँ, सडाको,” उसकी माँ ने जवाब दिया. “बहुत धूप है, इसलिए हल्के-हल्के जाना!” पर तब तक दोनों लड़कियों ने धूल भरी सड़क पर दौड़ना शुरू कर दिया था.

मिस्टर ससाकी हँसे. “क्या कभी तुमने सडाको को चलते हुए देखा है? वो हमेशा ही कूदती और दौड़ती है!”

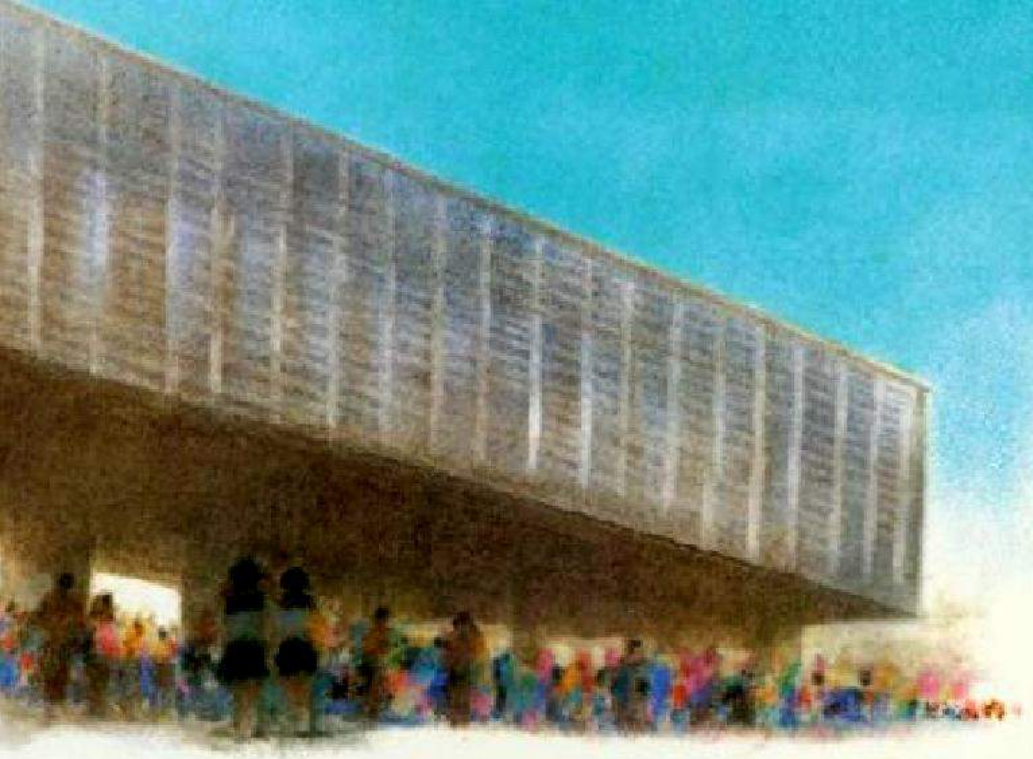

शांति-पार्क की इमारत के पास लोग अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित करने को चुपचाप खड़े थे. दीवारों पर एटम-बम्ब – "थंडरबोल्ट" से ध्वस्त शहर के फोटो थे. उस धमाके ने एक क्षण में हिरोशिमा को एक बंजर रेगिस्तान में बदल दिया था.

मुझे उस “थंडरबोल्ट” एटम-बम्ब का धमाका याद है,” सडाको ने हल्के से कहा. उस समय ऐसा लगा था जैसे करोड़ों सूरज एक साथ चमके हों. उसके बाद की भीषण गर्मी मेरी आँखों में सुइयों जैसी चुभी थी.”

“तुम्हें यह सब कैसे याद है?” चुज़ूको ने आश्चर्य से पूछा. “तुम उस समय बिल्कुल छोटी बेबी थीं.”

“नहीं, मुझे याद है!” सडाको ने पक्की तौर पर कहा.

मेयर के भाषण के बाद, सैकड़ों सफ़ेद कबूतर - शांति के प्रतीकों को, पिंजड़ों में से रिहा किया गया. फिर सूरज ढलने के बाद आसमान में आतिशबाजियों के करतब दिखाए गए.

उसके बाद सब लोग अपने हाथों में धान के कागज़ की बनी लालटेनें लेकर ओथा नदी के किनारे गए. लालटेनों के ऊपर उन व्यक्तियों का नाम लिखा था जो "थंडरबोल्ट" के धमाके में मारे गए थे. सडाको ने अपनी लालटेन पर अपनी दादी ओबासान का नाम लिखा था.

हरेक कागज़ की लालटेन के अन्दर एक मोमबत्ती जलाई गई. फिर लालटेनों को नदी की धार में बहाया गया. लालटेनों का काफिला अँधेरे में जुगनुओं की तरह टिमटिमा रहा था.

पतझड़ का मौसम अब शुरू हो चुका था. एक दिन सडाको स्कूल से दौड़ते हुए वापिस आई और उसने सबको एक खुशखबरी सुनाई.

“आज तो बस गज़ब हो गया. मैं अपने क्लास में रिले-रेस के लिए चुनी गई हूँ!” उसकी सांस फूल रही थी. फिर सडाको कमरे में ख़ुशी से नाचने लगी. “अगर मैं जीत गई तो अगले साल मैं स्कूल की टीम में ज़रूर चुनी जाऊंगी!”

स्कूल की टीम में चुने जाना सडाको की दिली तमन्ना थी.

उसके बाद सडाको हर समय केवल रेस के बारे में ही सोचती. वो हर रोज़ स्कूल में दौड़ने का अभ्यास करती. अक्सर वो दौड़ते-दौड़ते ही स्कूल से घर वापिस आती. मसाहिरो ने अपने पिता की घड़ी से सडाको के दौड़ने की गति को भी नापा.

सडाको बहुत तेज़ दौड़ने का सपना देखती थी. शायद वो एक दिन दुनिया की सबसे तेज़ धावक बने? उसने सोचा.

आखिर, रेस का दिन आ पहुंचा. बच्चों के माँ-बाप, रिश्तेदार और मित्र खेलों को देखने स्कूल में जमा हुए. सडाको कुछ घबराई हुई थी. उसे डर लगा कि कहीं दौड़ के समय उसके पैर ही न उठें.

"तुम फ़िक्र मत करो," मिसेज़ ससाकी के कहा. "मैदान में पहुँचते ही तुम एकदम फर्राटे से दौड़ोगी!"

फिर दौड़ शुरू होने की घंटी बजी. सडाको का पूरा ध्यान रेस पर ही केन्द्रित था. रिले-रेस में जब उसकी बारी आई तो सडाको अपनी जी-जान और पूरी शक्ति से दौड़ी. रेस ख़त्म होने के बाद उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था.

उस समय सडाको का सिर चक्कर खाने लगा. फिर कोई चिल्लाया, “सडाको, तुम्हारी टीम जीत गई! उसके बाद सडाको के क्लास ने उसे घेर लिया और वे खुशियाँ मनाने लगे. सडाको ने दो-तीन बार अपने सिर को झटका. उससे उसके सिर का चक्कर चला गया.

पूरे जाड़ों भर सडाको अपनी रफ़्तार को बेहतर करने का अभ्यास करती रही. लम्बी दौड़ के बाद कई बार उसका सिर चकराता था. पर उसने अपने परिवार में से किसी को भी उसके बारे में नहीं बताया. डर के मारे सडाको ने अपनी प्रिय मित्र चुजूको को भी उसके बारे में नहीं बताया.

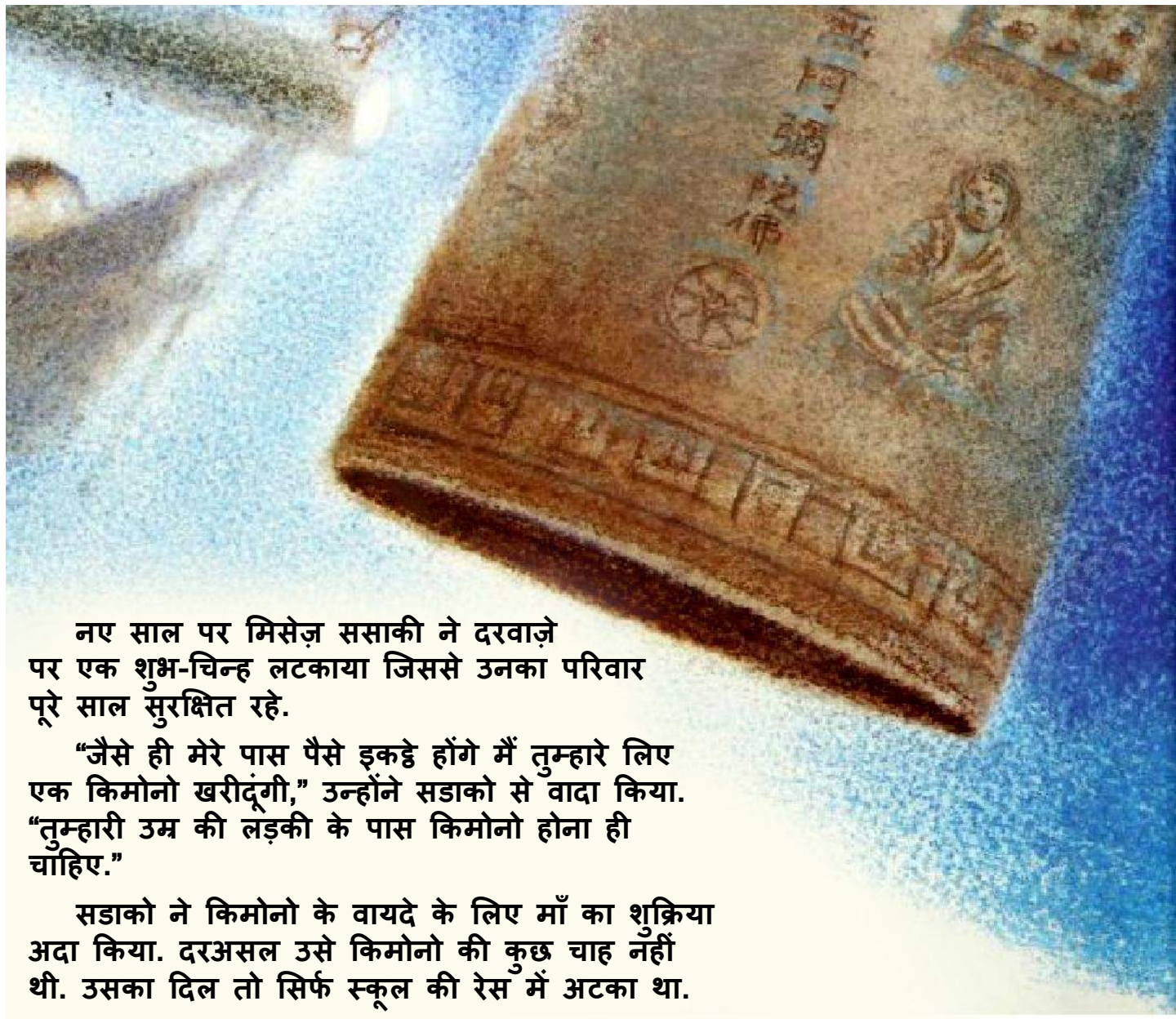

नए साल पर मिसेज़ ससाकी ने दरवाज़े पर एक शुभ-चिन्ह लटकाया जिससे उनका परिवार पूरे साल सुरक्षित रहे.

“जैसे ही मेरे पास पैसे इकट्ठे होंगे मैं तुम्हारे लिए एक किमोनो खरीदूंगी,” उन्होंने सडाको से वादा किया. “तुम्हारी उम्र की लड़की के पास किमोनो होना ही चाहिए.”

सडाको ने किमोनो के वायदे के लिए माँ का शुक्रिया अदा किया. दरअसल उसे किमोनो की कुछ चाह नहीं थी. उसका दिल तो सिर्फ स्कूल की रेस में अटका था.

कुछ हफ़्तों तक तो शुभ-चिन्ह ने अच्छा काम किया. सडाको ने खुद को मज़बूत और स्वस्थ्य महसूस किया और वो बहुत तेज़ दौड़ी.

पर फरवरी की ठंड में एक दिन सुबह जब सडाको स्कूल के मैदान में दौड़ रही थी तो अचानक उसे ज़ोर का चक्कर आया. चक्कर खाकर वो ज़मीन पर गिर पड़ी.

जल्दी ही सडाको ने खुद को रेड-क्रॉस के अस्पताल में पाया. एक नर्स ने उसके खून की जांच की. फिर डॉक्टर नुमाटा ने कई बार उसकी पीठ का मुआइना किया और उससे बहुत सारे सवाल पूछे.

सडाको ने डॉक्टर को "लयूकीमिया" शब्द का उपयोग करते हुए सुना. वो बीमारी एटम-बम्ब की वजह से होती थी. सडाको आगे कुछ नहीं सुनना चाहती थी, इसलिए उसने अपने दोनों हाथों से कानों को बंद कर लिया.

मिसेज ससाकी ने सडाको को अपनी गोद में लिया. "कुछ दिनों के लिए तुम्हें यहीं रहना पड़ेगा, बेटा" उन्होंने कहा. "पर मैं हर शाम को तुम्हें देखने के लिए आऊंगी."

“क्या मुझे वाकई में एटम-बम्ब वाली बीमारी हुई है?” सडाको ने उत्सुकता और घबराहट में पूछा.

“डॉक्टर कुछ और टेस्ट करना चाहते हैं, वैसे कुछ ख़ास बात नहीं है,” पिताजी ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा. “वो शायद तुम्हें यहाँ पर कुछ हफ्ते रखें.”

कुछ हफ्ते! सडाको को हफ्ते सालों जैसे लगे? अब वो स्कूल की रेस में हिस्सा कैसे लेगी? जब रात को परिवार के लोग घर चले गए तो सडाको अपना मुँह तकिए में छिपा कर घंटों रोई. इतना अकेलापन उसने पहले कभी नहीं महसूस किया था.

अगले दिन चुज़ूको उससे मिलने आई. चुज़ूको के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान थी.

“ज़रा अपनी आँखें बंद करो,” उसने कहा. सडाको ने कसकर अपनी आँखें भींच लीं. “अब तुम अपनी आँखें खोल सकती हो!”

सडाको ने अपने पलंग पर रखे कागज़ और कैंची को देखा. “यह किसके लिए हैं?”

“मैंने तुम्हारी तबियत ठीक करने का एक तरीका खोज निकाला है,” चुज़ूको ने गर्व से कहा, “देखो!”

फिर चुज़ूको ने सुनहरे कागज़ से एक बड़ा चौकोर काटा और उसे मोड़कर एक सुन्दर सुनहरी चिड़िया बनाई.

सडाको को कुछ समझ में नहीं आया. “पर यह कागज़ की चिड़िया भला मुझे कैसे ठीक करेगी?” उसने पूछा.

“क्या तुम्हें सारस पक्षी की पुरानी कहानी नहीं पता?” चुज़ूको ने पूछा. “सारस पक्षी एक हज़ार साल तक जीवित रहते हैं. अगर कोई बीमार व्यक्ति एक हज़ार कागज़ के पक्षी बनाए तो भगवान उसे दुबारा स्वस्थ्य बना देते हैं.”

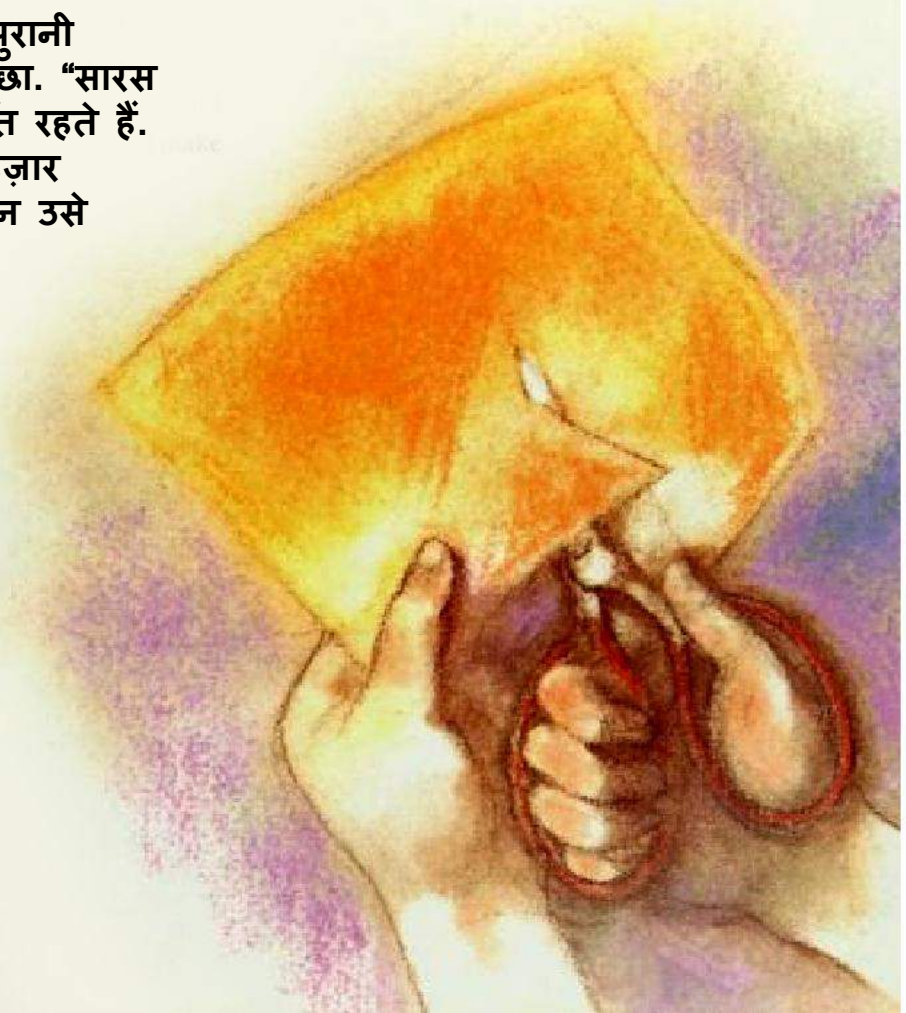

फिर उसने सडाको को वो सुनहरी चिड़िया दी. “यह रही तुम्हारी पहली चिड़िया.”

“तुम्हारा बहुत शुक्रिया, चुज़ूको,” सडाको फुसफुसाई. “मैं उसे हमेशा अपने पास रखूंगी.”

उस रात सडाको ने खुद को भाग्यशाली और सुरक्षित महसूस किया. फिर सडाको ने कई चिड़िये बनाईं और उन्हें मसाहीरो ने छत से लटका दिया. अब क्या था – कुछ ही दिनों में वो एक हज़ार चिड़िये मोड़ेगी और फिर अच्छी होकर घर वापिस जाएगी.

ग्यारह .....काश मैं अच्छी हो जाऊं!
बारह .....काश मैं अच्छी हो जाऊं!

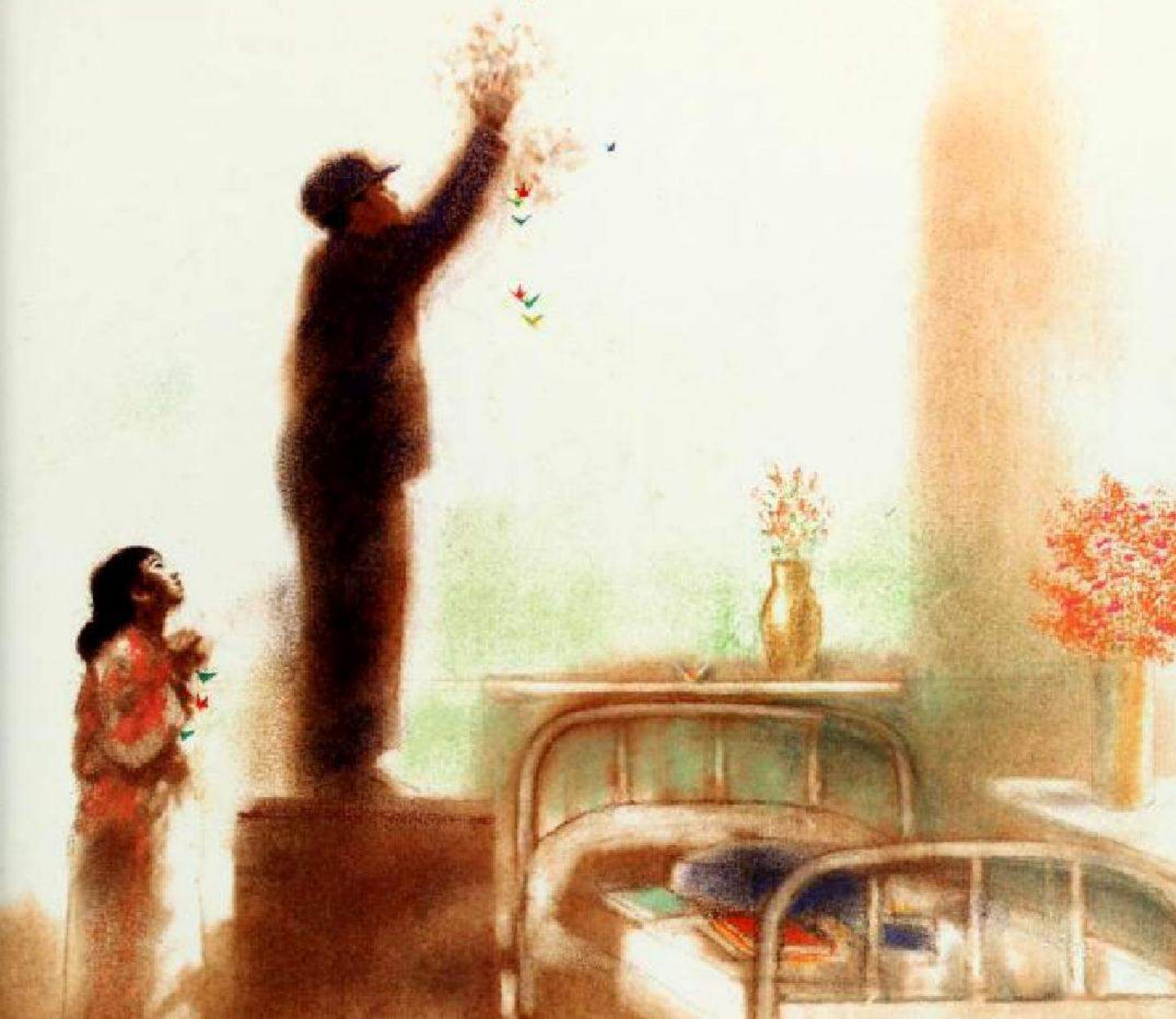

एक दिन नर्स यासुनागा, सडाको को बाहर बरामदे में धूप सेंकने के लिए ले गई. वहां सडाको, केंजी से मिली. केंजी नौ साल का था पर वो अपनी उम्र से कहीं छोटा दिखता था. सडाको उसके बौने चेहरे और चमकती काली आँखों को घूरती रही.

जल्द ही दोनों एक-दूसरे से दोस्तों जैसे बातें करने लगे. केंजी अस्पताल में काफी समय से था. उसके माता-पिता की मृत्यु हो चुकी थी इसलिए बहुत कम लोग ही उससे मिलने आते थे.

"अब कुछ फर्क नहीं पड़ता है," केंजी ने दुखी आवाज़ में कहा. "मैं जल्द ही मर जाऊँगा, क्योंकि मुझे एटम-बम्ब से खून का कैंसर "लयूकीमिया" हुआ है."

सडाको को कुछ समझ में नहीं आया कि वो क्या कहे. सडाको उसे सांत्वना देना चाहती थी. फिर उसे याद आया. "तुम मेरी तरह कागज़ की चिड़िये बना सकते हो," सडाको ने कहा, "क्या पता कोई चमत्कार हो जाए!"

"मुझे उन चिड़ियों के बारे में पता है," केंजी ने धीमी आवाज़ में कहा. "उसके लिए अब बहुत देर हो चुकी है. अब भगवान भी मेरी मदद नहीं कर सकते."

उस रात को सडाको ने सबसे सुन्दर कागज़ से एक बड़ा पक्षी मोड़ा. उसने उसे कैंजी के पास भेजा. क्या पता इस शुभ-संकेत से उसकी तकदीर बदले? फिर सडाको ने अपने लिए और पक्षी मोड़े.

एक सौ अट्ठानवे .....काश मैं अच्छी हो जाऊं!

एक सौ निन्यानवे .....काश मैं अच्छी हो जाऊं!

जब एक दिन केंजी बरामदे में नहीं आया तो सडाको को लगा कि वो चल बसा होगा.

उस रात बहुत देर तक सडाको खिड़की के पास बैठी रोती रही. कुछ देर बाद उसने नर्स के हाथ को अपने कंधे पर महसूस किया.

"क्या केंजी उन असंख्य तारों में से एक में चला गया?" सडाको ने पूछा.

"वो अब जहाँ कहीं भी है, मेरे ख्याल से वो खुश है," नर्स ने कहा. "अपने थके और बीमार शरीर को उसने अब त्याग दिया है. अब उसकी आत्मा पूरी तरह मुक्त है."

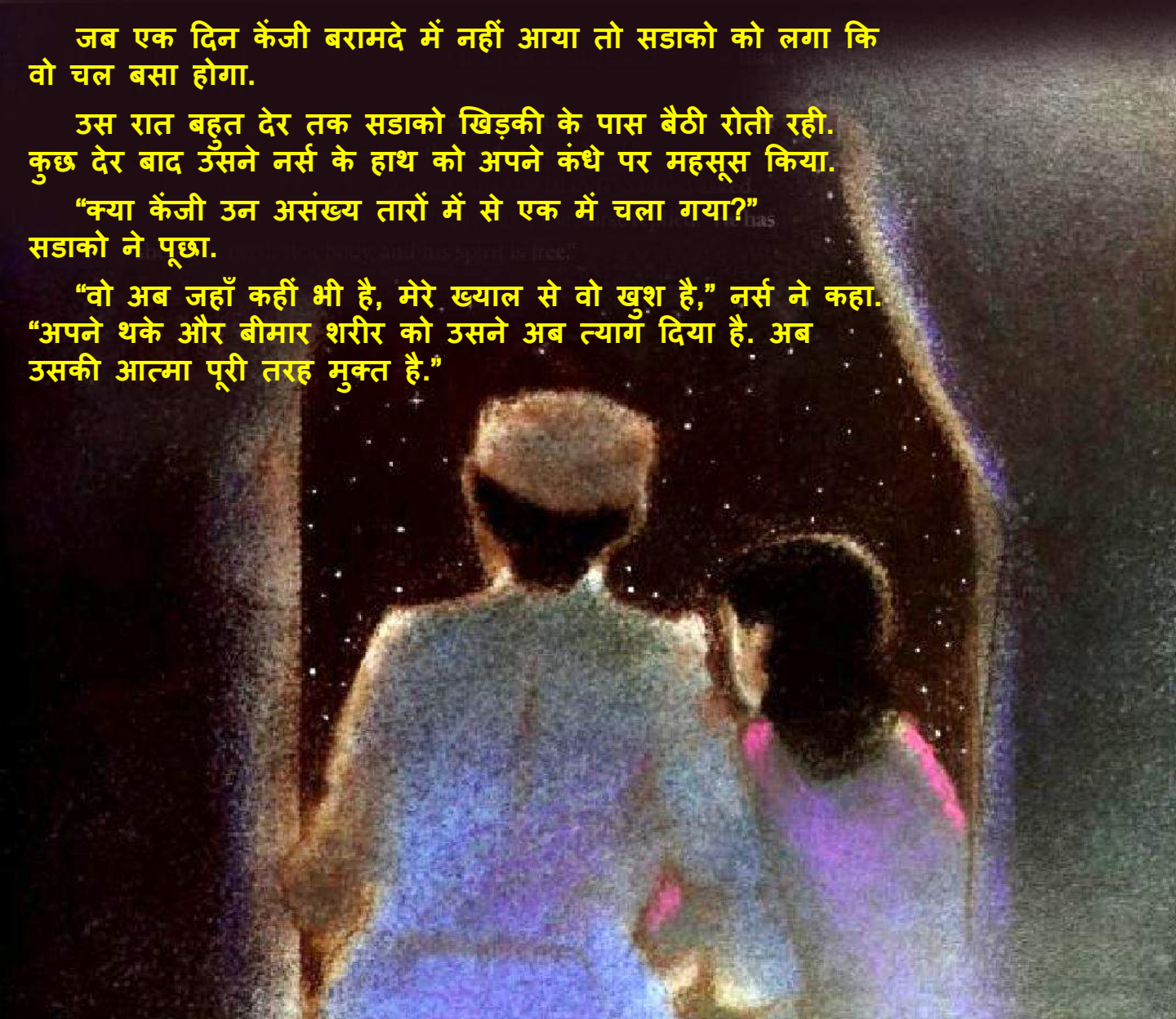

“इसके बाद मैं ही मरूंगी, हैं न?”

“नहीं,” नर्स ने सिर हिलाकर कहा. “सोने से पहले मुझे कागज़ का एक और पक्षी मोड़कर दिखाओ. जब तुम्हारे एक हज़ार पक्षी बन जायेंगे तब तुम ठीक हो जाओगी, और फिर लम्बी उम्र तक जिंदा रहोगी.”

सडाको को नर्स की बात पर यकीन करने में कठिनाई हो रही थी. वो अभी तक तीन सौ पक्षी मोड़ चुकी थी.

जुलाई का महीना गर्म था और सडाको की तबियत कुछ सुधर रही थी.

“अब मैं हज़ार में से आधी चिड़ियें तो मोड़ चुकी हूँ,” उसने मसाहिरो से कहा, “इसलिए अब कुछ अच्छा ही होगा.”

और ऐसा हुआ भी.

सडाको को दुबारा से भूख लगने लगी और उसका दर्द भी कम हुआ. वो ओ-बॉन पर्व के लिए अपने घर जाने वाली थी, क्योंकि तभी साल की सबसे लम्बी छुट्टियाँ होती थीं. ओ-बॉन एक विशेष पर्व था जब मृत आत्माएं पृथ्वी पर अपने प्रियजनों को मिलनें आती थीं.

मिसेज ससाकी और मित्सुए ने पूरा घर साफ़ किया था. पूरा घर अच्छे व्यंजनों की खुशबू से महक रहा था. चावल के लड्डू और बीन्स के केक भगवान की मूर्तियों के सामने रखे थे.

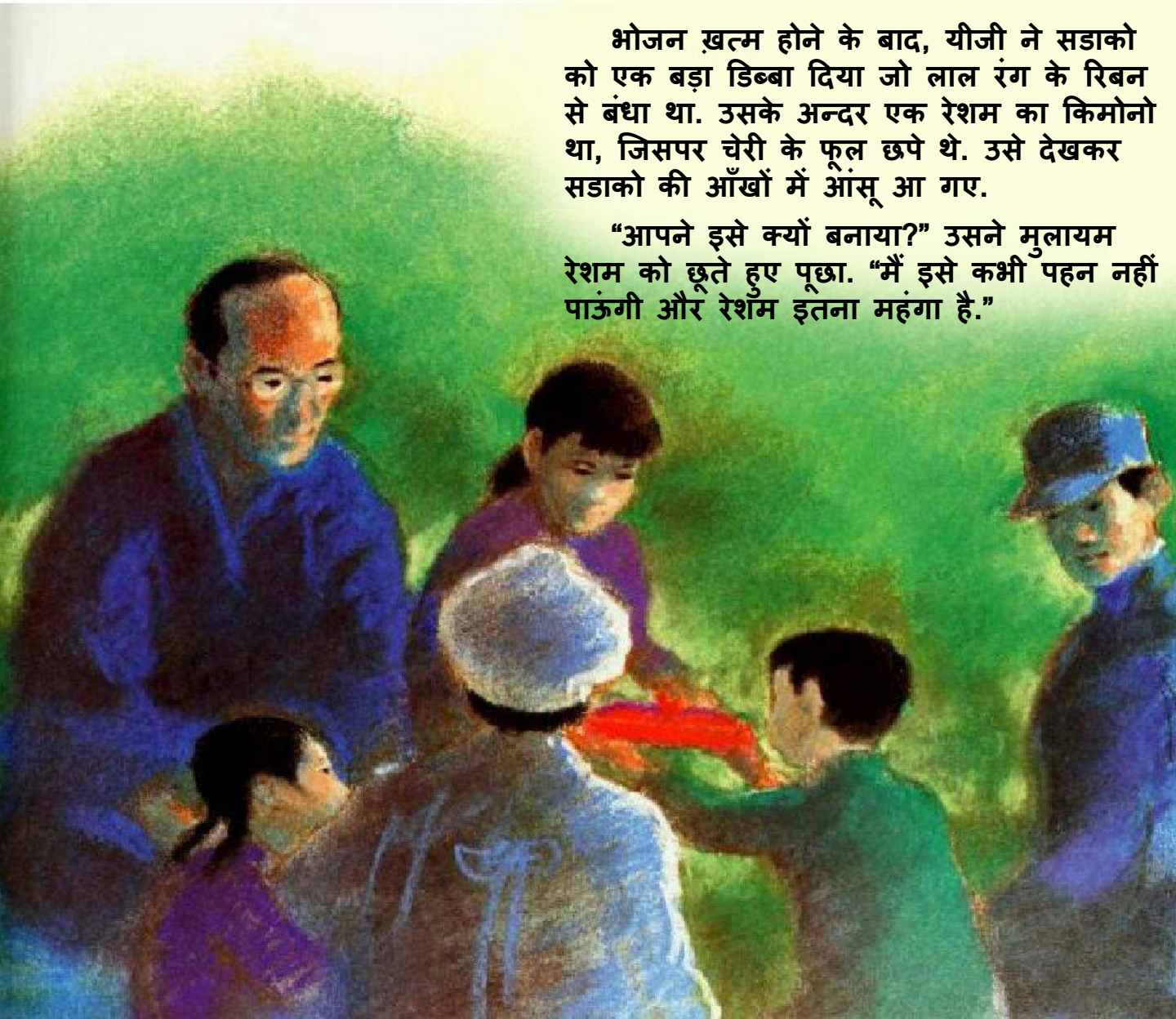

भोजन ख़त्म होने के बाद, यीजी ने सडाको को एक बड़ा डिब्बा दिया जो लाल रंग के रिबन से बंधा था. उसके अन्दर एक रेशम का किमोनो था, जिसपर चेरी के फूल छपे थे. उसे देखकर सडाको की आँखों में आंसू आ गए.

“आपने इसे क्यों बनाया?” उसने मुलायम रेशम को छूते हुए पूछा. “मैं इसे कभी पहन नहीं पाऊंगी और रेशम इतना महंगा है.”

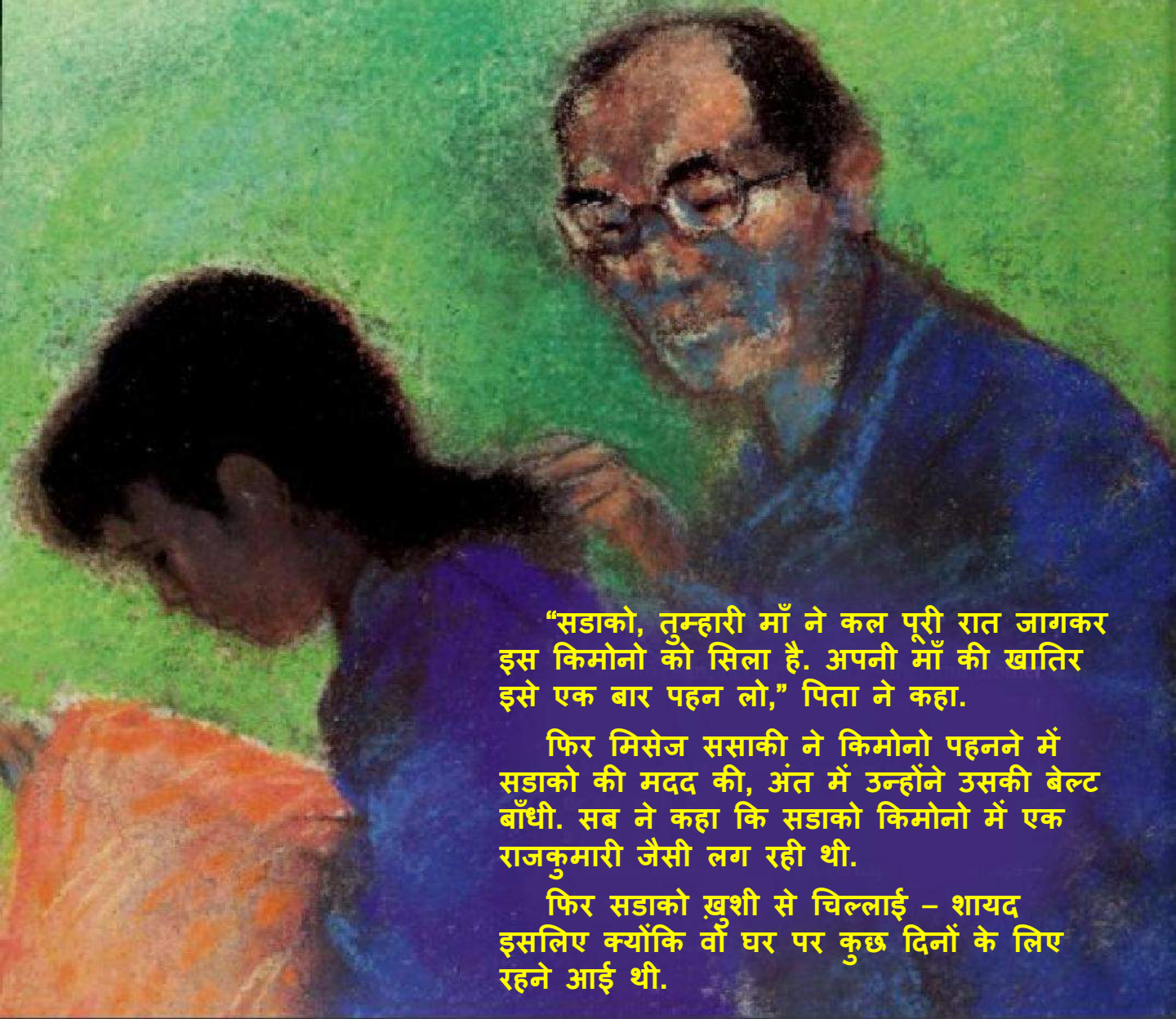

“सडाको, तुम्हारी माँ ने कल पूरी रात जागकर इस किमोनो को सिला है. अपनी माँ की खातिर इसे एक बार पहन लो,” पिता ने कहा.

फिर मिसेज ससाकी ने किमोनो पहनने में सडाको की मदद की, अंत में उन्होंने उसकी बेल्ट बाँधी. सब ने कहा कि सडाको किमोनो में एक राजकुमारी जैसी लग रही थी.

फिर सडाको ख़ुशी से चिल्लाई – शायद इसलिए क्योंकि वो घर पर कुछ दिनों के लिए रहने आई थी.

हफ्ते एक अंत तक सडाको फिर से कमजोरी महसूस करने लगी और उसे वापिस अस्पताल जाना पड़ा. उसके क्लास के बच्चों ने सडाको को खुश करने के लिए एक “कोकेशी” गुड़िया भेजी. सडाको ने उस गुड़िया को अपनी मेज़ पर सुनहरे पक्षी के पास रखा.

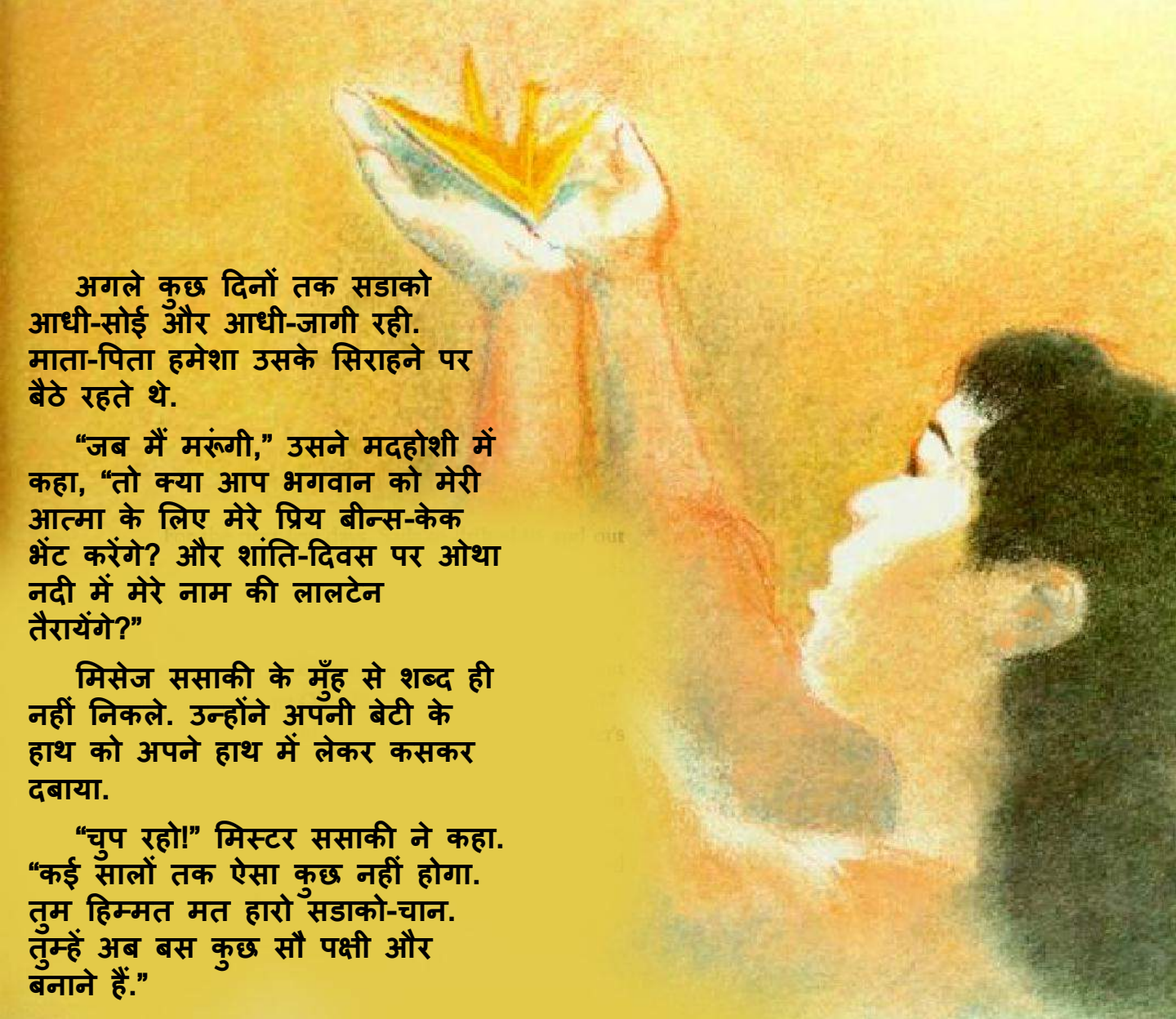

अगले कुछ दिनों तक सडाको आधी-सोई और आधी-जागी रही. माता-पिता हमेशा उसके सिराहने पर बैठे रहते थे.

"जब मैं मरूंगी," उसने मदहोशी में कहा, "तो क्या आप भगवान को मेरी आत्मा के लिए मेरे प्रिय बीन्स-केक भेंट करेंगे? और शांति-दिवस पर ओथा नदी में मेरे नाम की लालटेन तैरायेंगे?"

मिसेज ससाकी के मुँह से शब्द ही नहीं निकले. उन्होंने अपनी बेटी के हाथ को अपने हाथ में लेकर कसकर दबाया.

"चुप रहो!" मिस्टर ससाकी ने कहा. "कई सालों तक ऐसा कुछ नहीं होगा. तुम हिम्मत मत हारो सडाको-चान. तुम्हें अब बस कुछ सौ पक्षी और बनाने हैं."

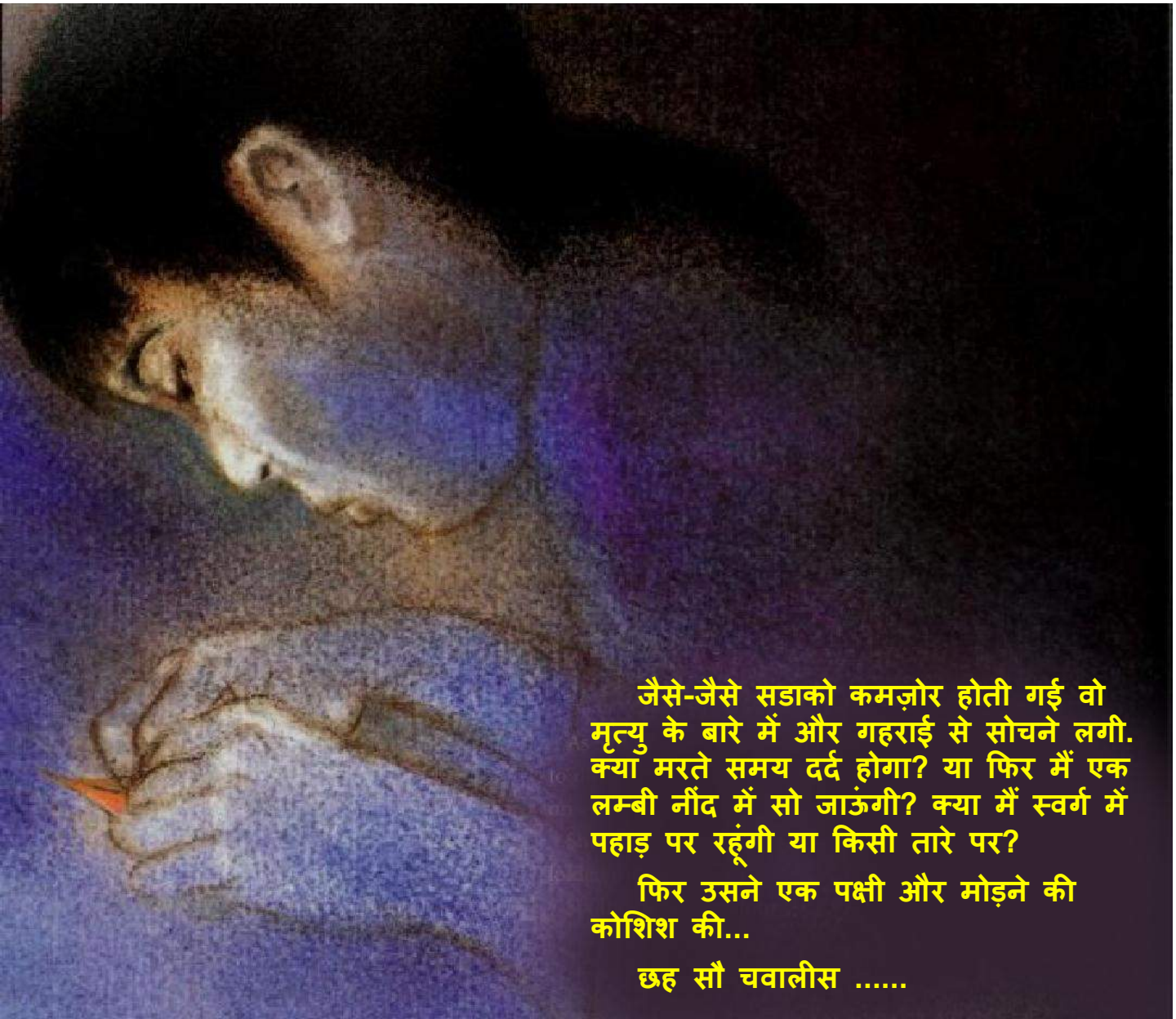

जैसे-जैसे सडाको कमज़ोर होती गई वो मृत्यु के बारे में और गहराई से सोचने लगी. क्या मरते समय दर्द होगा? या फिर मैं एक लम्बी नींद में सो जाऊंगी? क्या मैं स्वर्ग में पहाड़ पर रहूंगी या किसी तारे पर?

फिर उसने एक पक्षी और मोड़ने की कोशिश की...

छह सौ चवालीस .....

फिर माँ ने आकर सडाको का माथा छुआ. माँ ने हल्के से उसके हाथ से कागज़ हटा दिया. जब सडाको ने अपनी आँखें बंद की तो उसने माँ को यह शब्द बुदबुदाते हुए सुना.

“स्वर्ग की चिड़ियों का झुंड
मेरी बच्ची को अपने पंखों से ढँको.”

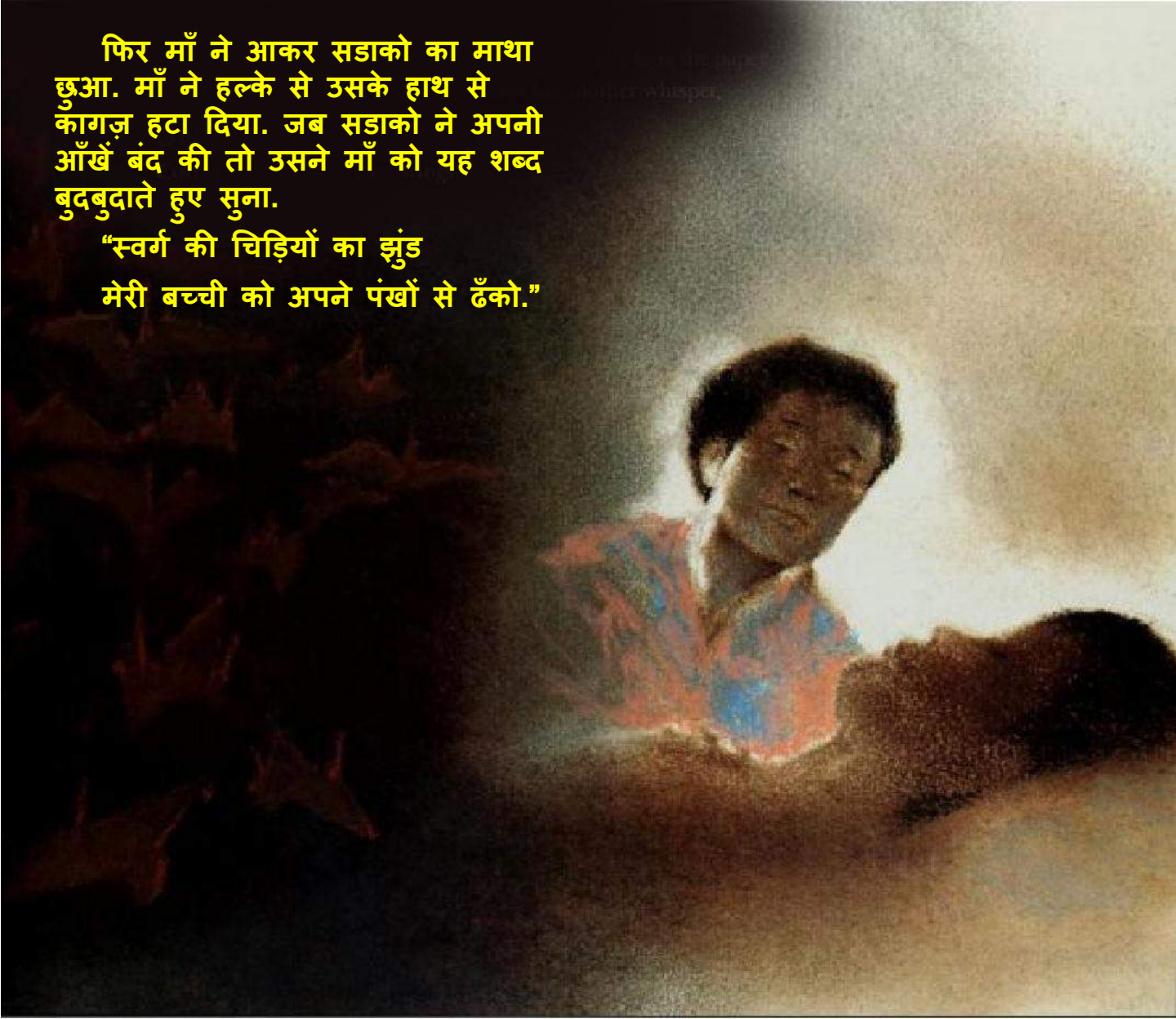

जब सडाको ने दुबारा अपनी आँखें खोलीं तो उसका पूरा परिवार उसके पलंग के पास खड़ा था. उसने सभी के चेहरों को देखा और मुस्कुराई. उसे पता था कि वो उसे हमेशा याद रखेंगे.

सडाको ने सीलिंग से लटकती हुई चिड़ियों को निहारा. तभी पतझड़ की हवा का एक झोंका आया और सारी चिड़िए हवा में मंडराने लगीं. ऐसा लगा जैसे वे चिड़िए जीवित हों और खिड़की के बाहर नीले आसमान की ओर पंख पसारे उड़ रही हों.

सडाको ने एक आंह भरी और फिर अपनी आँखें बंद कर लीं. अब वो मुक्त थी.

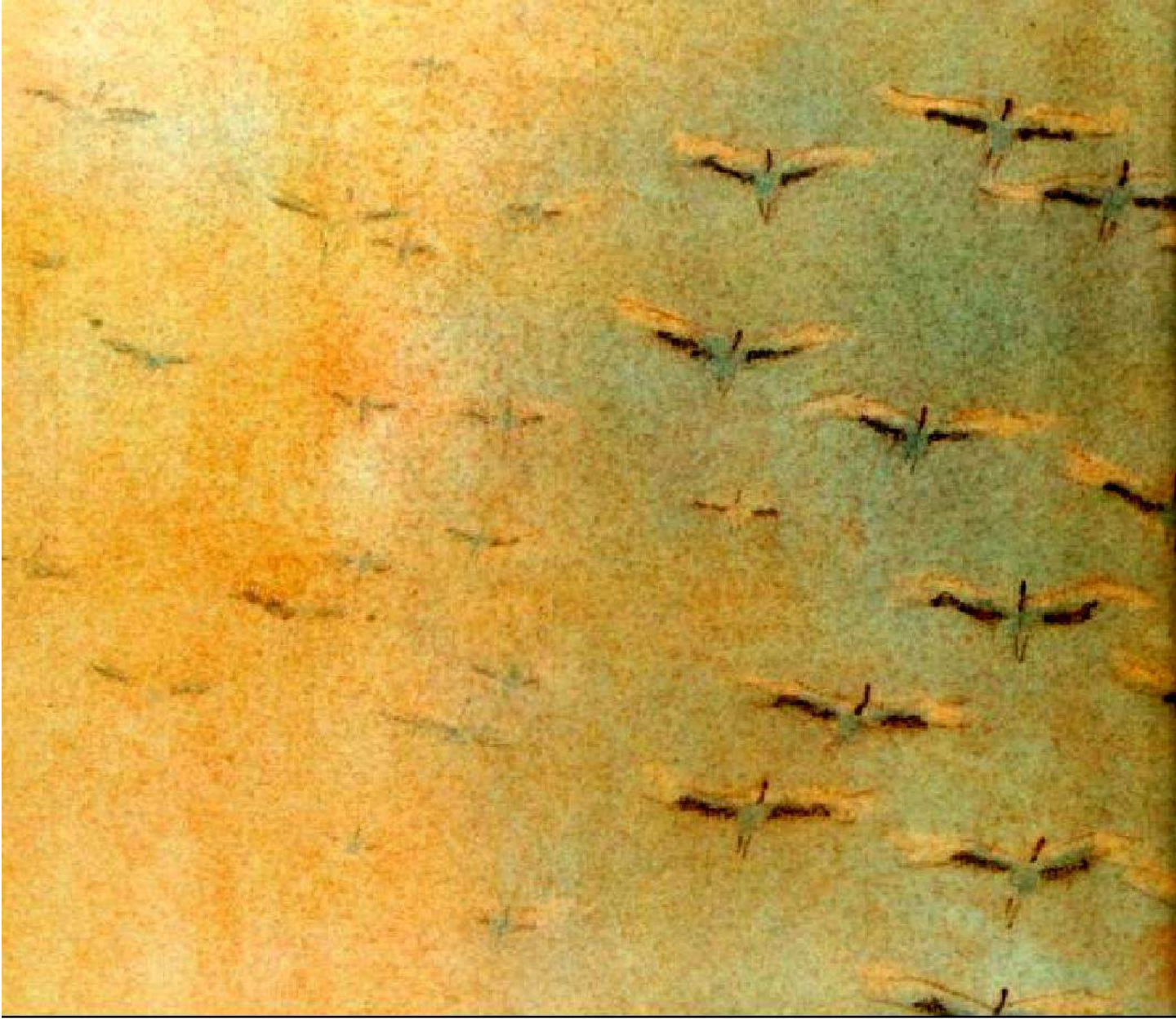

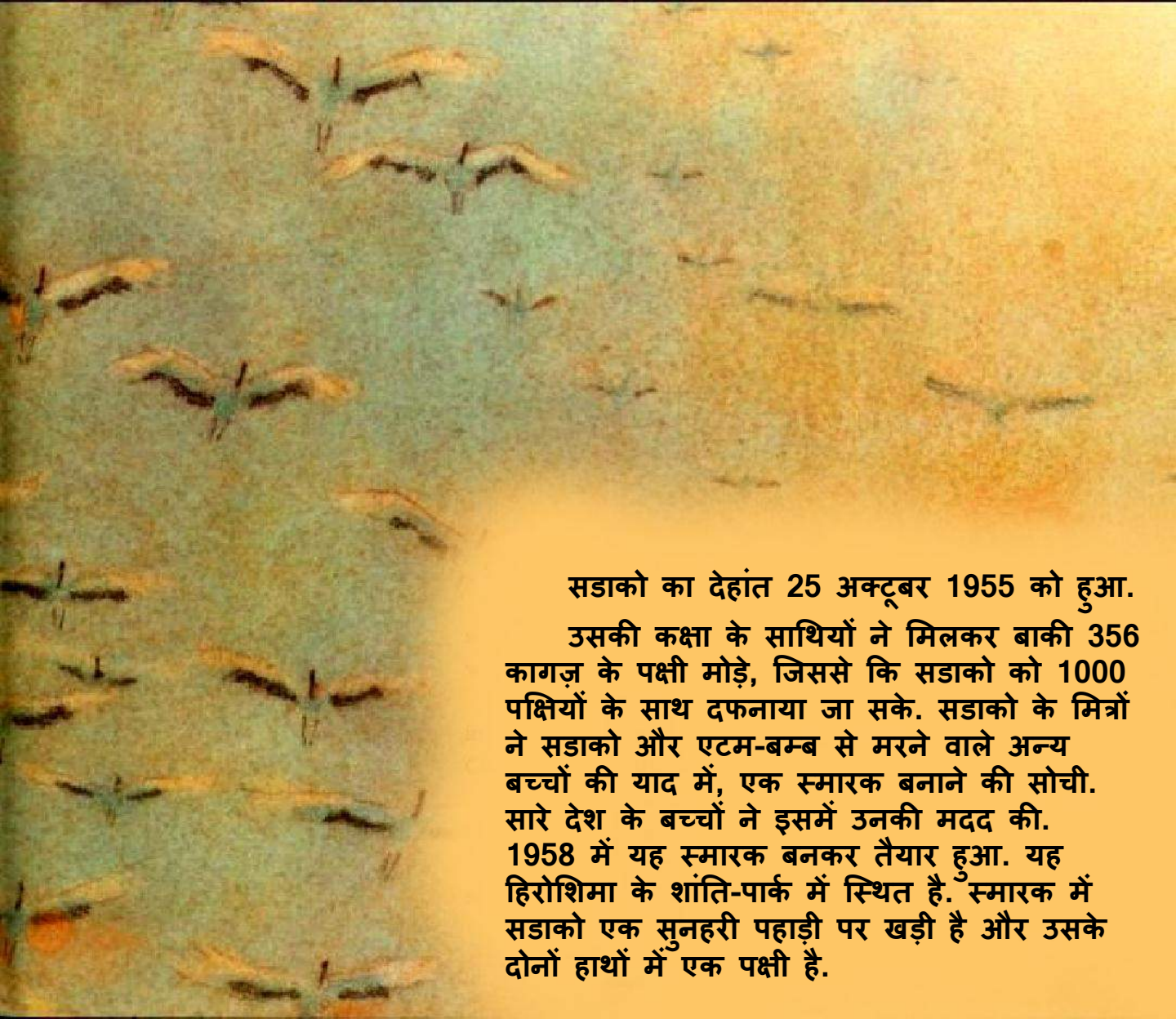

सडाको का देहांत 25 अक्टूबर 1955 को हुआ.

उसकी कक्षा के साथियों ने मिलकर बाकी 356 कागज़ के पक्षी मोड़े, जिससे कि सडाको को 1000 पक्षियों के साथ दफनाया जा सके. सडाको के मित्रों ने सडाको और एटम-बम्ब से मरने वाले अन्य बच्चों की याद में, एक स्मारक बनाने की सोची. सारे देश के बच्चों ने इसमें उनकी मदद की. 1958 में यह स्मारक बनकर तैयार हुआ. यह हिरोशिमा के शांति-पार्क में स्थित है. स्मारक में सडाको एक सुनहरी पहाड़ी पर खड़ी है और उसके दोनों हाथों में एक पक्षी है.

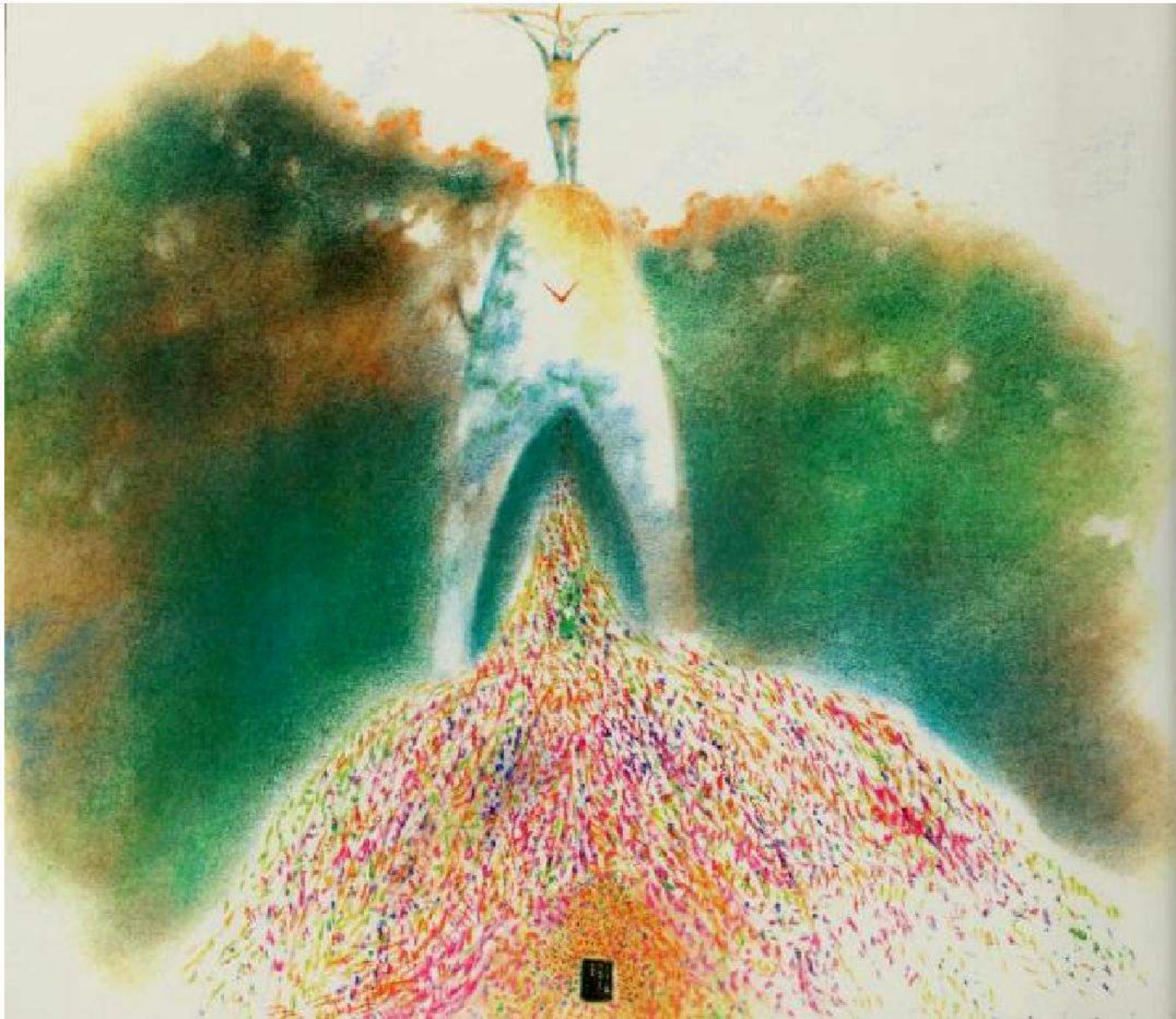

हरेक साल, शांति-दिवस पर बच्चे सडाको के
स्मारक पर कागज़ के पक्षियों की मालाएं पहनाते हैं.

यही हमारे आंसू हैं
यही हमारी प्रार्थना है
दुनिया में शांति हो!

अनेकों अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से पुरुस्कृत पुस्तक